रक्षाबन्धन

(श्रावण, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा)

संक्षिप्त परिचय

- श्रावण शुक्ल की पूर्णिमा को भारतवर्ष में भाई-बहन के प्रेम व रक्षा का पवित्र त्योहार 'रक्षाबन्धन' मनाया जाता है। सावन में मनाए जाने के कारण इसे 'श्रावणी', 'सावनी' या 'सलूनो' भी कहते हैं।
- 'रक्षाबंधन' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है 'रक्षा' और 'बंधन' जिसका अर्थ है 'किसी की रक्षा के लिए वचनबद्ध होना'। भातृप्रेम को प्रगाढ़ बनाता रक्षाबंधन का पर्व भाई व बहन के अनकहे स्नेह शपथ का परिचायक है। रक्षाबंधन श्रावण की पूर्णिमा के दिन प्रतिवर्ष अमूमन अगस्त के महीने में मनाया जाता है।
- इसी दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी का कोमल धागा बाँधती हैं। यह धागा उनके बीच प्रेम व स्नेह का प्रतीक होता है। यही धागा भाई को प्रतिबद्ध करता है कि वह अपनी बहन की हर कठिनाई व कष्ट में रक्षा करेगा।

रक्षासूत्र

- भारतीय परम्परा में विश्वास का बन्धन ही मूल है और रक्षाबन्धन इसी विश्वास का बन्धन है। यह पर्व मात्र रक्षा-सूत्र के रूप में राखी बाँधकर रक्षा का वचन ही नहीं देता वरन् प्रेम, समर्पण, निष्ठा व संकल्प के जरिए हृदयों को बाँधने का भी वचन देता है।
- पहले रक्षाबन्धन बहन-भाई तक ही सीमित नहीं था, अपितु आपत्ति आने पर अपनी रक्षा के लिए अथवा किसी की आयु और आरोग्य की वृद्धि के लिये किसी को भी रक्षा-सूत्र बांधा या भेजा जाता था। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि- 'मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव'- अर्थात 'सूत्र' अविच्छिन्नता का प्रतीक है, क्योंकि सूत्र (धागा) बिखरे हुए मोतियों को अपने में पिरोकर एक माला के रूप में एकाकार बनाता है। माला के सूत्र की तरह रक्षा-सूत्र (राखी) भी लोगों को जोड़ता है।

शास्त्रों के अनुसार रक्षाबंधन

- हेमाद्रि ने भविष्योत्तर पुराण का उद्धरण देते हुए लिखा है कि इन्द्राणी ने इन्द्र के दाहिने हाथ में रक्षासूत्र बाँधकर उसे इतना योग्य बना दिया कि उसने असुरों को हरा दिया। जब पूर्णिमा चतुर्दशी या आने वाली प्रतिपदा से युक्त हो तो रक्षा-बन्धन नहीं होना चाहिए। इन दोनों से बचने के लिए रात्रि में ही यह कृत्य कर लेना चाहिए। यह कृत्य अब भी होता है और पुरोहित लोग दाहिनी कलाई में रक्षा बाँधते हैं और दक्षिणा प्राप्त करते हैं। गुजरात, उत्तर प्रदेश एवं अन्य स्थानों में नारियाँ अपने भाइयों की कलाई पर रक्षा बाँधती हैं और भेंट लेती-देती हैं। श्रावण की पूर्णिमा को पश्चिमी भारत (विशेषतः कोंकण एवं मालाबार में) न केवल हिन्दू, प्रत्युत मुसलमान एवं व्यवसायी पारसी भी, समुद्र तट पर जाते हैं और समुद्र को पुष्प एवं नारियल चढ़ाते हैं। श्रावण की पूर्णिमा को समुद्र में तूफ़ान कम उठते हैं और नारियल इसीलिए समुद्र-देव (वरुण) को चढ़ाया जाता है कि वे व्यापारी जहाज़ों को सुविधा दे सकें।

पौराणिक कथा के अनुसार रक्षाबंधन

- भविष्य पुराण में एक कथा के अनुसार प्राचीन काल में एक बार बारह वर्षों तक देवासुर-संग्राम होता रहा, जिसमें देवताओं की हार हो रही थी। दुःखी और पराजित इन्द्र, गुरु बृहस्पति के पास गए। वहाँ इन्द्र पत्नी शचि भी थीं। इन्द्र की व्यथा जानकर इन्द्राणी ने कहा - 'कल ब्राह्मण शुक्ल पूर्णिमा है।मैं विधानपूर्वक रक्षासूत्र तैयार करुंगी। उसे आप स्वस्तिवाचनपूर्वक ब्राह्मणों से बंधवा लीजिएगा। आप अवश्य ही विजयी होंगे।' दूसरे दिन इन्द्र ने इन्द्राणी द्वारा बनाए रक्षाविधान का स्वस्तिवाचनपूर्वक बृहस्पति से रक्षाबंधन कराया, जिसके प्रभाव से इन्द्र सहित देवताओं की विजय हुई। तभी से यह 'रक्षाबंधन' पर्व ब्राह्मणों के माध्यम से मनाया जाने लगा। इस दिन बहनें भी भाइयों की कलाई में रक्षासूत्र बाँधती हैं और उनके सुखद जीवन की कामना करती हैं।

महाभारत की कथा के अनुसार रक्षाबंधन

- रक्षाबंधन का विस्तृत इतिहास हिन्दू पौराणिक कथाओं में मिलता है। महाभारत में कृष्ण ने शिशुपाल का वध अपने चक्र से किया था। शिशुपाल का सिर काटने के बाद जब चक्र वापस कृष्ण के पास आया तो उस समय कृष्ण की उंगली कट गई तो भगवान कृष्ण की उंगली से रक्त बहने लगा। यह देखकर द्रौपदी ने अपनी साड़ी का किनारा फाड़ कर कृष्ण की उंगली में बांधा था, जिसको लेकर कृष्ण ने उसकी रक्षा करने का वचन दिया था। इसी ऋण को चुकाने के लिए दुःशासन द्वारा चीरहरण करते समय कृष्ण ने द्रौपदी की लाज रखी। तब से 'रक्षाबंधन' का पर्व मनाने का चलन चला आ रहा है।
- आज भी रक्षाबंधन के दिन देश में कई स्थानों पर ब्राह्मण, पुरोहित अपने यजमान की समृद्धि हेतु उन्हें रक्षासूत्र बाँधते हैं और यजमान उन्हे श्रद्धाभाव से दक्षिणा प्रदान करते है।

राजा बलि की कथा के अनुसार रक्षाबंधन

- एक अन्य कथानुसार राजा बलि को दिये गये वचनानुसार भगवान विष्णु बैकुण्ठ छोड़कर बलि के राज्य की रक्षा के लिये चले गये। तब देवी लक्ष्मी ने ब्राह्मणी का रूप धर श्रावण पूर्णिमा के दिन राजा बलि की कलाई पर पवित्र धागा बाँधा और उसके लिए मंगलकामना की। इससे प्रभावित हो बलि ने देवी को अपनी बहन मानते हुए उसकी रक्षा की कसम खायी। तत्पश्चात् देवी लक्ष्मी अपने असली रूप में प्रकट हो गयीं और उनके कहने से बलि ने भगवान विष्णु से बैकुण्ठ वापस लौटने की विनती की।

महत्त्व

- रक्षाबंधन वैसे तो हिन्दू समाज के परिवारों में बहनों द्वारा भाइयों को रक्षा सूत्र बांधने के पर्व के रूप में प्रचलित है किन्तु रक्षाबंधन के पर्व का भारतीय जनमानस में प्राचीन काल से ही गहरा संबंध रहा है। पुरातन भारतीय परंपरा में समाज का मार्गदर्शक शिक्षक वर्ग होता था, वह रक्षासूत्र के सहारे इस देश की ज्ञान परंपरा की रक्षा का संकल्प शेष समाज से कराता था।
- सांस्कृतिक और धार्मिक पुरोहित वर्ग भी रक्षा सूत्र के माध्यम से समाज से रक्षा का संकल्प कराता था। राजव्यवस्था के अन्दर राजपुरोहित राजा को रक्षा सूत्र बाँध कर धर्म और सत्य की रक्षा के साथ साथ संपूर्ण प्रजा की रक्षा का संकल्प कराता था।
- आज भी किसी भी धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान के बाद रक्षासूत्र के माध्यम से उपस्थित सभी जनों को रक्षा का संकल्प कराया जाता है।

- वस्तुतः रक्षाबंधन का मौलिक भाव यही है कि समाज का शक्ति सम्पन्न वर्ग विशिष्ट अपनी शक्ति सामर्थ्य का बोध और दायित्व ध्यान में रखकर समाज के श्रेष्ठ मूल्यों का एवं समाज की रक्षा का संकल्प लेता है।

रक्षाबंधन और राष्ट्र सेवक संघ

- संघ के संस्थापक परम पूज्य डॉक्टर साहब हिन्दू समाज में समरसता स्थापित करना चाहते थे तो उन्हे स्वाभाविक रूप से यह पर्व समस्त हिन्दू समाज के लिए परस्पर मिलकर समस्त हिन्दू समाज की रक्षा का संकल्प लेने के दायित्व बोध के रूप में मनाने का विचार आया और उन्होंने इस पर्व के सुन्दर स्वरूप के साथ इसे संघ उत्सव के रूप में स्थापित किया।
- संघ के उत्सवों के रूप में स्थापित होने के साथ इसके अर्थ का विस्तार हुआ और यह सीमित अर्थों में संकुचित न रहकर व्यापक अर्थों में समाज के प्रत्येक वर्ग की रक्षा का संकल्प लेने का उत्सव बन गया। समाज का एक भी अंग अपने आपको अलग-थलग या असुरक्षित अनुभव न करने पाये – यह भाव जाग्रत करना संघ का उद्देश्य है।
- रक्षाबंधन आपसी विश्वास का पर्व है। इस पर्व पर जो-जो सक्षम हैं , वे अन्य को विश्वास दिलाते हैं कि वे निर्भय रहें ,किसी भी संकट में सक्षम उनके साथ खड़े रहेंगे। संघ ने इस उत्सव और अपने करोड़ों स्वयंसेवकों के माध्यम से इसी विश्वास को समाज में पुनर्स्थापित करने का श्रेयस्कर कार्य कर रहा है ।
- रक्षा बंधन के पर्व पर स्वयंसेवक परम पवित्र भगवा ध्वज को रक्षा सूत्र बांधकर उस संकल्प का स्मरण करते हैं, जिसमें कहा गया है कि धर्मो रक्षति रक्षित: अर्थात् हम सब मिलकर धर्म की रक्षा करें और समाज में मूल्यों का रक्षण करें। इसके साथ ही अपनी श्रेष्ठ परंपराओं का रक्षण करें। तभी तो धर्म सम्पूर्ण समाज की रक्षा करने में सक्षम हो सकेगा। यही धर्म का व्यावहारिक पक्ष है। धर्म कोई बाहरी तत्व नहीं है यह हम सबमें छिपी या मुखर उदात्त भावनाओं का नाम है। हमारे व्यवहार में जो लोकमंगलकारी है, वही धर्म है। ध्वज को रक्षा सूत्र बांधने का हेतु भी यही है कि समाज के लिये हितकर उदात्त परंपरा का रक्षण करेंगे।
- स्वयंसेवक भी एक-दूसरे को स्नेह-सूत्र बांधते हैं। जाति, धर्म, भाषा, धनसंपत्ति, शिक्षा या सामाजिक ऊंच-नीच का भेद अर्थहीन है। रक्षाबंधन का सूत्र इन सारी विविधताओं और भेदों के ऊपर एक अभेद की सृष्टि करता है. इन विविधताओं के बावजूद एक सामरस्य का स्थापन करता है। इस नन्हें से सूत्र से क्षण भर में स्वयंसेवक परस्पर आत्मीय भाव से बंध जाते हैं। परम्परा का भेद और कुरीतियों का कलुष कट जाता है। प्रेम और एक दूसरे के प्रति समर्पण का भाव गहराई तक सृजित होता है।
- कार्यक्रम के उपरांत स्वयंसेवक अपने समाज की उन बस्तियों में जाते हैं जो सदियों से वंचित एवं उपेक्षित हैं। वंचितों एवं उपेक्षितों के बीच बैठकर उनको भी रक्षा सूत्र बांधते और बंधवाते हुए हम उस संकल्प को दोहराते हैं जिसमें भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं- समानम् सर्व भूतेषु. यह अभूतपूर्व कार्यक्रम है जब लाखों स्वयंसेवक इस देश की हजारों बस्तियों में निवास करने वाले लाखों वंचित परिवारों में बैठकर रक्षा बंधन के भाव को प्रकट करते हैं। विगत वर्षों के ऐसे कार्यक्रमों के कारण हिंदू समाज के अंदर ऐक्य एवं सामरस्य भाव-संचार का गुणात्मक परिवर्तन दिखाई दे रहा है, उसके पीछे संघ के इस कार्यक्रम की महती भूमिका है।
- इसके पीछे उद्देश्य और भाव यही है कि सम्पूर्ण समाज, सम्पूर्ण समाज की रक्षा का व्रत ले. लोग श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की रक्षा का व्रत लें। सशक्त, समरस एवं संस्कार संपन्न समाज ही किसी देश

की शक्ति का आधार हो सकता है। संघ इसी प्रयत्न में लगा है। रक्षा बंधन का यह पर्व इसी महाअभियान के चरणरूप में है।

रक्षाबंधन के विभिन्न स्वरूप

- मुम्बई के कई समुद्री इलाकों में इसे 'नारियल-पूर्णिमा' या 'कोकोनट-फुलमून' के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन विशेष रूप से समुद्र देवता पर नारियल चढ़ाकर उपासना की जाती है और नारियल की तीन आँखों को शिव के तीन नेत्रों की उपमा दी जाती है।
- बुन्देलखण्ड में राखी को 'कजरी-पूर्णिमा' भी कहा जाता है। इस दिन कटोरे में जौ व धान बोया जाता है तथा सात दिन तक पानी देते हुए माँ भगवती की वन्दना की जाती है।
- उत्तरांचल के चम्पावत ज़िले के देवीधूरा मेले में राखी-पर्व पर बाराही देवी को प्रसन्न करने के लिए पाषाणकाल से ही पत्थर युद्ध का आयोजन किया जाता रहा है, जिसे स्थानीय भाषा में 'बग्वाल' कहते हैं।

रक्षाबन्धन और स्वतंत्रता संग्राम

- हरियाणा राज्य में अवस्थित कैथल जनपद के फतेहपुर गाँव में सन् 1857 में एक युवक गिरधर लाल को रक्षाबन्धन के दिन अंग्रेज़ों ने तोप से बाँधकर उड़ा दिया था, इसके बाद से गाँव के लोगों ने गिरधर लाल को शहीद का दर्जा देते हुए रक्षाबन्धन पर्व मनाना ही बंद कर दिया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के 150 वर्ष पूरे होने पर सन् 2006 में जाकर इस गाँव के लोगों ने इस पर्व को पुन: मनाने का निर्णय लिया।
- 1905 में अंग्रेजों द्वारा बंगाल विभाजन का विरोध करने के लिए रवींद्र नाथ टैगोर ने रक्षाबंधन को बंगालियों के बीच परस्पर भ्रातृभाव के प्रतीक के रूप में प्रचारित करके राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग किया था।

21 वीं सदी में रक्षाबंधन की प्रासंगिकता

आजकल की व्यस्त और ग्लोबल दुनिया में रक्षाबंधन एक महत्वपूर्ण सामाजिक समारोह है जो परिवार के सदस्यों को एकत्रित करता है। इक्कीसवीं सदी में रक्षाबंधन की प्रासंगिकता को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर देखा जा सकता है-

- परंपरा और सम्बंधों का महत्व: रक्षाबंधन एक प्राचीन हिन्दू पर्व है जो परंपरागत सम्बंधों और परिवारिक एकता को बढ़ावा देता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों को राखी बांधकर उनकी रक्षा का प्रतीक देती हैं, जिससे सांस्कृतिक और परिवार के संबंधों में मजबूती आती है।
- सामाजिक समर्थन और भाईचारा: रक्षाबंधन समाज में सहयोग और समर्थन की भावना को बढ़ाता है। इस अवसर पर भाई बहन के बीच एक विशेष बंधन का उत्थान होता है, जो उन्हें आपसी समझ और आदर्शों के साथ जोड़ता है।
- महिला सशक्तिकरण: आधुनिक समय में रक्षाबंधन महिलाओं के सशक्तिकरण का प्रतीक भी बन चुका है। इसे भारतीय महिलाओं के लिए एक प्यारा त्योहार के रूप में माना जाता है, जिससे उन्हें समाज में उनके महत्व की मान्यता मिलती है।

- सांस्कृतिक धारोहर का प्रतीक: रक्षाबंधन एक ऐसा त्योहार है जो भारतीय सांस्कृतिक धारोहर का हिस्सा है और इसे विशेष धूमधाम से मनाया जाता है। यह धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव के साथ समृद्ध है।
- व्यापारिक महत्त्व: व्यापारिक दृष्टिकोण से भी रक्षाबंधन एक महत्वपूर्ण अवसर है, जिसमें बाजारों में राखी, गिफ्ट्स और अन्य सामग्री की बड़ी व्यापारिक गतिविधियां होती हैं।
- वस्तुतः रक्षाबंधन वर्तमान समाज में एक महत्वपूर्ण पर्व है जो सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक और आर्थिक महत्व के साथ जुड़ा हुआ है। यह एक विशेष मौका प्रदान करता है जिसमें सम्बंधों को मजबूत किया जाता है और समृद्धि की कामना की जाती है।

संदर्भ

संघ उत्सव, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली

मेल्टन, जे गॉर्डन (2011) धार्मिक समारोह: छुट्टियों, त्योहारों, पवित्र अनुष्ठानों , और आध्यात्मिक स्मरणोत्सवों का एक विश्वकोश एबीसी-सीएलओ।